ISSN 2347-4041

-8
-6
फरवरी: 2019
Impact Factor - 3.245
UGC Approved No.41232

साहित्य, शिक्षा,
वाणिज्य, मानविकी,
विज्ञान एवं सभी विषयों की

संस्कार चेतना

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका (मासिक)

INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

प्रधान संपादक
डॉ. विजय दत्त शर्मा

संपादक
डॉ. केवल कृष्ण

शोध चेतना अकादमी
वसुधैव कुटुम्बकम् संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.)

वैश्विक स्तर पर भारतीय संगीत डॉ. प्रतिभा शर्मा	177-180
मिथकों पर प्रहार : सूअरदान सुनीता	181-184
श्रीमद्भगवद्गीता एवं शिक्षानीति डॉ. विदुषा	185-187
भारत में भूमि स्वामित्व : प्राक् औपनिवेशिक काल का एक अध्ययन धीरज कौशिक	188-193
आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में साम्प्रदायिक चेतना डॉ. सुभाष चंद, डॉ. बिजेन्द्र कुमार	194-199
Solving Systems of Volterra Integral Equations of Second Kind by Trapezoidal Rule Sukhvinder	200-204
Search for wholeness in the fiction of Doris Lessing Parshant Kumar	205-209
A Study on Green Marketing: A strategy for Sustainable Development Rupali Lamba	210-215
Role of Financial Institutions in The Growth of India Ranju	216-220
ऐतिहासिक स्त्रोत के रूप मे कुमार गुप्त प्रथम के सोने के सिक्कों का अध्ययन पूनम	221-225
वर्तमान हिंदी कथा साहित्य में लिव-इन रिलेशनशिप डॉ. सुभाष चंद, डॉ. बिजेन्द्र कुमार	226-233
A New Dimension in Indian Banking: Cashless and Demonetization Prince Singla	234-237
मुगल साम्राज्य के पतन पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण मन्जीत सिंह	238-243
साहित्य एवं आलोचना डॉ. मुन्नी देवी	244-247
स्मृतियों में न्याय-व्यवस्था डॉ. पी. सी. शर्मा	248-252
Yogic Practices Reduced the Stress Level of Teacher Trainees of Different Stream Dr Bhanvra Kumari	253-261

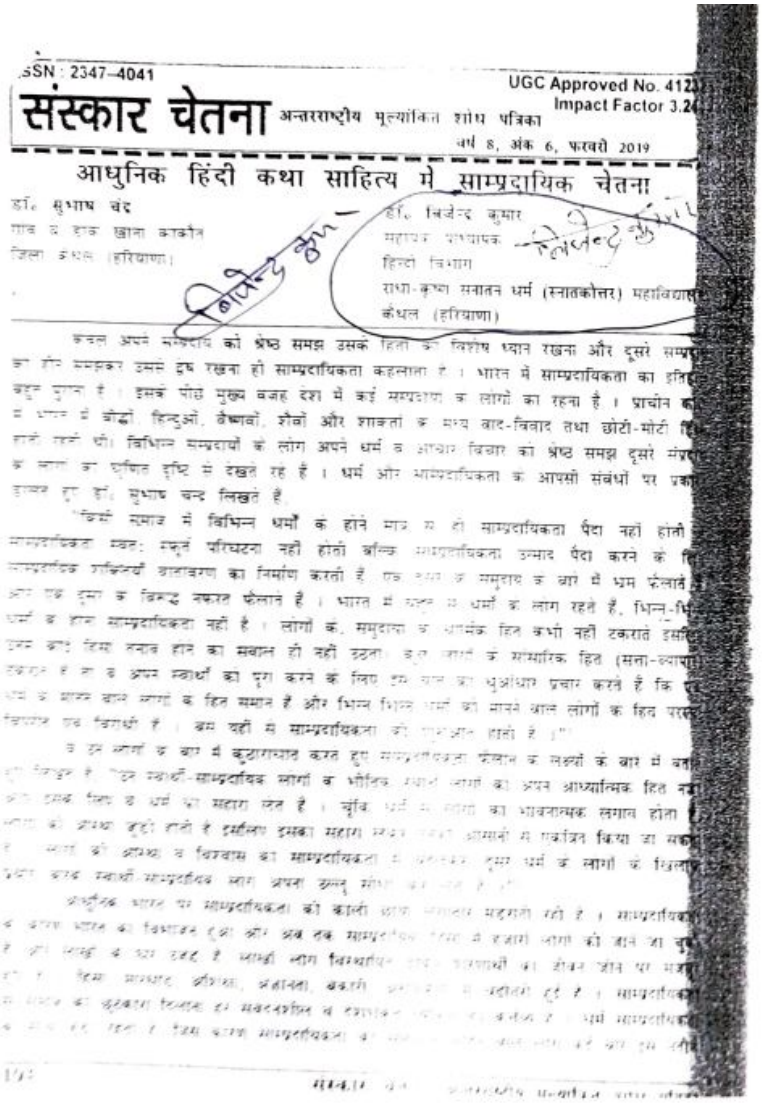

ISSN : 2347-4041
UGC Approved No. 412[illegible]
संस्कार चेतना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका
Impact Factor 3.2[illegible]
वर्ष 8, अंक 6, फरवरी 2019

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में साम्प्रदायिक चेतना

डॉ० सुभाष चंद
गांव व डाक खाना काकौत
जिला कैथल (हरियाणा)

डॉ० बिजेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
राधा-कृष्ण सनातन धर्म (स्नातकोत्तर) महाविद्या[illegible]
कैथल (हरियाणा)

केवल अपने सम्प्रदाय को श्रेष्ठ समझ उसके हितों का विशेष ध्यान रखना और दूसरे सम्प्र[illegible] का हीन समझकर उनसे द्वेष रखना ही साम्प्रदायिकता कहलाता है । भारत में साम्प्रदायिकता का इति[illegible] बहुत पुराना है । इसके पीछे मुख्य वजह देश में कई सम्प्रदायों के लोगों का रहना है । प्राचीन [illegible] में भारत में बौद्धों, हिन्दुओं, वैष्णवों, शैवों और शाक्तों के मध्य वाद-विवाद तथा छोटी-मोटी [illegible] होती रहती थी। विभिन्न सम्प्रदायों के लोग अपने धर्म व आचार विचार को श्रेष्ठ समझ दूसरे सम्प्र[illegible] के लोगों को घृणित दृष्टि से देखते रहे हैं । धर्म और साम्प्रदायिकता के आपसी संबंधों पर प्रका[illegible] डालते हुए डॉ० सुभाष चन्द लिखते हैं,

"किसी समाज में विभिन्न धर्मों के होने मात्र से ही साम्प्रदायिकता पैदा नहीं होती [illegible] साम्प्रदायिकता स्वतः स्फूर्त परिघटना नहीं होती बल्कि साम्प्रदायिकता उन्माद पैदा करने के [illegible] साम्प्रदायिक शक्तियाँ वातावरण का निर्माण करती हैं, एक धर्म के समुदाय के बारे में भ्रम फैलाते [illegible] और एक दूसरे के विरुद्ध नफरत फैलाते हैं । भारत में अनेक धर्मों के लोग रहते हैं, भिन्न-भि[illegible] धर्मों के होना साम्प्रदायिकता नहीं है । लोगों के, समुदायों के धार्मिक हित कभी नहीं टकराते इसलि[illegible] उनमें कोई हिंसा तनाव होने का सवाल ही नहीं उठता। कुछ लोगों के सांसारिक हित (सत्ता-व्यापा[illegible]) टकराते हैं तो वे अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए इस बात का धुआंधार प्रचार करते हैं कि [illegible] धर्म के मानने वाले लोगों के हित समान हैं और भिन्न भिन्न धर्मों को मानने वाले लोगों के हित परस्[illegible] विपरीत एवं विरोधी हैं । बस यहीं से साम्प्रदायिकता की शुरूआत होती है ।"[1]

[illegible] लोगों के बारे में कुठाराघात करते हुए साम्प्रदायिकता फैलाने के तत्वों के बारे में बता[illegible] [illegible] स्वार्थी-साम्प्रदायिक लोगों के भौतिक [illegible] लोगों को अपने आध्यात्मिक हित न[illegible] [illegible] लिए वे धर्म का सहारा लेते हैं । चूंकि धर्म से लोगों का भावनात्मक लगाव होता [illegible] लोगों की आस्था जुड़ी होती है इसलिए इसका सहारा [illegible] आसानी से एकत्रित किया जा सक[illegible] [illegible] लोगों की आस्था व विश्वास का साम्प्रदायिकता में [illegible] दूसरे धर्म के लोगों के खिला[illegible] [illegible] स्वार्थी साम्प्रदायिक लोग अपना उल्लू सीधा [illegible] ।"[2]

[illegible] भारत पर साम्प्रदायिकता की काली छाया [illegible] मंडराती रही है । साम्प्रदायिक[illegible] के कारण भारत का विभाजन हुआ और अब तक साम्प्रदायिक [illegible] में हजारों लोगों की जानें जा चु[illegible] [illegible] [illegible] लाखों लोग विस्थापित [illegible] शरणार्थी का जीवन जीने पर म[illegible] [illegible] [illegible]

पर पहुँच जाते हैं कि साम्प्रदायिकता की जड़ धर्म में है । साम्प्रदायिकता का धर्म से गहरा ताल्लुक होते हुए भी धर्म उसकी उत्पत्ति का कारण नहीं है । इसलिए धर्म और साम्प्रदायिकता के अन्त[illegible] संबंधों को समझना निहायत जरूरी है । इस बात को स्पष्ट करते हुए डॉ० सुभाष चन्द लिखते हैं

"धर्म का क्षेत्र और साम्प्रदायिकता का क्षेत्र बिल्कुल भिन्न है। धर्म में ईश्वर का, परलोक का स्वर्गनरक का, पुनर्जन्म का, आत्मा-परमात्मा का विचार होता है । सच्चे धर्म का सारा ध्यान पारलौकिक आध्यात्मिक जगत से संबंधित होता है। धर्म में भौतिक जगत की कोई जगह नहीं होती जबकि इसके विपरीत साम्प्रदायिकता का अध्यात्म से कुछ भी लेना-देना नहीं है और साम्प्रदायिक लोग अपने भौतिक स्वार्थों जैसे राजनीति, सत्ता, व्यापार आदि की चिंता अधिक करते हैं ।"[3]

साम्प्रदायिकता हमारे देश पर अभिशाप है । हर धर्म की अपनी मर्यादा और मान्यताएं हैं । उनके आपस में टकराव है । धार्मिक कट्टरता के साथ राजनीति भी जुड़ गई है। धर्म के अंधे भक्त तथा चालाक राजनीतिज्ञ इस साम्प्रदायिकता से लाभ उठाते हैं। साधारण अज्ञानी तथा निरीह, निर्दोष लोग हिंसा, आगजनी तथा लूट का शिकार होते हैं । भयंकर विनाश की खबरें छपती है । ये धर्मात्मा तथा समाज के अपराधी वर्ग मिलकर देश में नए विध्वंश की तैयारी गोपनीय रूप में करते हैं ।

21वीं सदी का हिन्दी कथा साहित्य भी धर्म व साम्प्रदायिकता से अछूता नहीं है । साहित्यकार समाज के प्रति संवेदनशील होता है। वह समाज में घट रही घटनाओं व विद्रूपताओं को उजागर करता है तथा समाज को नया रास्ता दिखाता है । कथाकार दिनेश पाठक अपनी कहानी 'हालात' में हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक उपद्रव का जीवन्त वर्णन करते हुए इसके भयानक परिणामों पर प्रकाश डालते हुए काफी गमगीन हो गया था । लेकिन अपने परिचित जावेद से तेईस वर्ष पश्चात मिला और दोनों के मध्य काफी लंबा वार्तालाप गाँव, कस्बों व वहीं पर स्थित बाजार, दुकानों के विषय में हुआ । जावेद साम्प्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए लेखक से कहता है,

"हाँ 55, बड़े भाई । वह बहुत बुरा दौर था । उन दिनों मुल्क में मारपीट, आगजनी, कत्ल..... पता नहीं क्या क्या । हम सुनते, बुरा लगता, बहुत बुरा पर, अपना सीना चौड़ा रहता कि देखो, हमारा कस्बा एक नजीर है पूरे वतन के लिए । पर जाने क्या हुआ कि इस कस्बे पर किसी की नजर लग गई थी । एक रात यहाँ भी दंगे की आग भड़क उठी । जमकर आगजनी हुई । अपना चीनस भी उस राख में मिल गया..... सब खत्म..... जिन्दगी फुटपाथ पर आकर खड़ी हो गई। उसके बाद तो इस कस्बे में कई दिनों तक कर्फ्यू लगा रहा । लोगों ने पहली दफा कर्फ्यू का चेहरा देखा ।"[4]

दिनेश पाठक की दूसरी कहानी 'आखिर नहीं छपी कहानी' गुजरात की पृष्ठभूमि पर हुए साम्प्रदायिक दंगों से जूझती हुई कहानी है, जिसमें साम्प्रदायिकता के जन्म व विस्तार की घटनाओं तथा हादसों का क्रमबद्ध वर्णन हुआ है । कहानी के चार नायक हैं- हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई । ये धर्मावलम्बी परोक्ष रूप से किसी पर वार नहीं करते बल्कि मासूमियत भोलेपन से एक-दूसरे के विरुद्ध षड्यंत्र रचते हैं । इस चक्रव्यूह में ये लोग ऐसे फंस जाते हैं कि इनका वहाँ से निकलना बहुत कठिन हो जाता है । कथाकार दिनेश पाठक साम्प्रदायिकता की प्राथमिक पाठशाला के प्रशिक्षण का वर्णन करते हुए कहता है कि -

"उन चारों के भीतर पहले नफरत के पौधे उगाए जाते हैं, उन्हें फिर जहर से सींचा जाता है । ऐसा करने वाले कौन हैं? चारों यह जानने का प्रयास नहीं करते । उन्हें ऐसी घुट्टी पिलाई जाती है, जिससे उनका जुनून क्रमशः बढ़ता जाता है, उतरने का नाम ही नहीं लेता । उनका जमकर उपयोग किया जाता है, ऐसे हालात पैदा कर दिए जाते हैं कि चारों मित्र एक-दूसरे का मुँह तक नहीं देखना चाहते थे । अपने मकसद में कामयाब होने पर बाहर से आए दंगाई अन्ततः उन्हें भी नहीं बख्शते ।"